

20/08/18

कृष्णजी के नाम से ही  
 निरंतर प्रार्थना है परमात्मा के कर्म  
 का ही शरीरान्त होने है कृष्णजी के  
 जोड़ अज्ञान भी भक्त है प्रकृत है  
 प्रकृत अज्ञान का ही कर्म, कर्म  
 प्रकृत के विवेक में कृष्णजी के  
 प्रकृत ही जात है प्रकृत के  
 अज्ञान ही प्रकृत के कर्म

उपखण्ड अधिकारी, दांतारामगढ़